मारवाड़ी विरासत

डॉ. डी. के. टकनेत

2025
आईआईएमई, जयपुर

इंटरनेशनल इंस्टिट्यूट ऑफ मैनेजमेंट एंड एंट्रप्रन्योरशिप (आईआईएमई)
(राष्ट्रीय स्तर का शोध संस्थान जो भारत सरकार के विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी मंत्रालय का वैज्ञानिक व औद्योगिक शोध संगठन है।)
आईआईएमई, गेट नं. 1, लक्ष्मीनारायण मन्दिर, जवाहरलाल नेहरू मार्ग, जयपुर-302004
मोबाइल : 9799398502/05; दूरभाष : 0141-2620111
ईमेल : iime.jaipur@gmail.com; वेबसाइट : www.iimejaipur.org

प्रथम संस्करण : 2025

आईएसबीएन : 978-81-935143-2-0

लेखन एवं परियोजना-निर्देशन
डॉ. डी. के. टकनेत

शोध, अभिलेखागार व अभिकल्पना
सुजाता टकनेत
सीआईआरएमसी, जयपुर

संपादन
रामानंद राठी
प्रो. सुरेन्द्र डी. सोनी
अशोक भारतीय
गोविन्द सिंह नेगी
किशन चंद

वरिष्ठ शोध सहयोगीगण
ब्रिगेडियर के. एन. पंडित, वीएसएम
देवांग टकनेत
शम्भु प्रसाद चौधरी
कुं. एस. एन. सिंह
एस. मुखर्जी

चित्रांकन
समदर सिंह खंगारोत
गोपाल स्वामी खेतांची
धर्मपाल
राजेन्द्र आर्य

छायांकन
मिशेल बेंगुइन
ड्योडी वॉन शेवॉन
राज चौहान
गोपाल कुमावत
त्रिलोकचंद महावर
डिनोदिया फोटो लाइब्रेरी

डिजाइन और तकनीकी सहयोग
प्रदीप गौड़
पवन शर्मा
उत्तम सेन

कार्यालय समन्वयन
छोटेलाल महावर
मनोज पांचाल

भारत में मुद्रण
थॉमसन प्रेस इंडिया लिमिटेड, नई दिल्ली

यह शोध अध्ययन आईआईएमई, जयपुर द्वारा किया गया है, जो भारत सरकार के विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी मंत्रालय का एक वैज्ञानिक व औद्योगिक शोध संगठन है। जिसे भारत व राजस्थान के *राजपत्र* में अधिसूचित किया गया है। इस कॉफी टेबल बुक के मुद्रण हेतु कागज, जे.के. पेपर लिमिटेड द्वारा उपलब्ध करवाया गया है। इस पुस्तक से अर्जित आय राजस्थान तथा सामाजिक विज्ञान की शोध परियोजनाओं पर व्यय की जाएगी, जिसका किसी भी व्यक्ति द्वारा निजी लाभ के लिए उपयोग नहीं किया जाएगा। साथ ही इसकी बिक्री व्यापार के माध्यम से या अन्य किसी प्रकार से यथा - उधार, पुनर्विक्रय या किराये पर नहीं की जाएगी या अन्य किसी व्यक्ति/संस्था के द्वारा प्रकाशक की पूर्व-लिखित सहमति के बिना किसी अन्य रूप में प्रयोग नहीं की जाएगी। इस प्रकाशन का कोई भी अंश पुन: प्रकाशन, संग्रहण या मुद्रण में नहीं लिया जा सकता एवं न ही किसी भी अन्य रूप में यह किसी माध्यम से प्रेषित किया जा सकता है। साथ ही बिना पूर्व-लिखित अनुमति के इसे इलेक्ट्रॉनिक, मैकेनिकल, फोटोकॉपी, रिकॉर्डिंग या अन्य माध्यमों से प्रचारित-प्रसारित नहीं किया जाएगा।

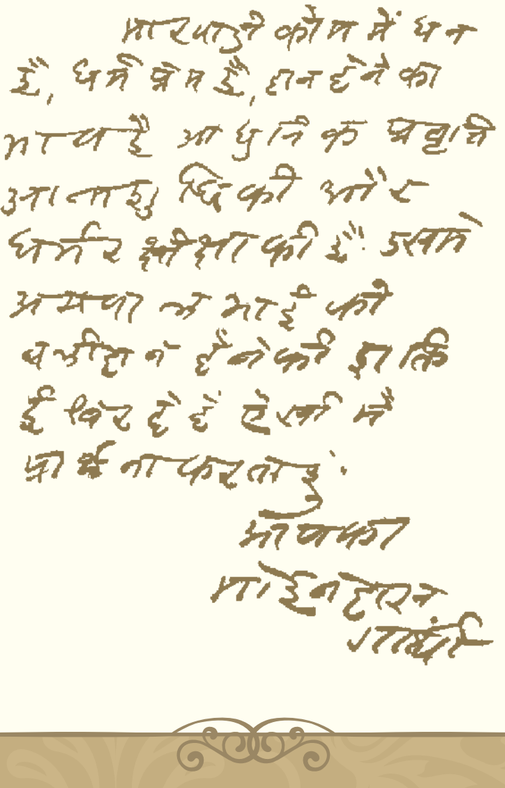

समर्पण

मारवाड़ी समाज
के उन अज्ञात विस्मृत
अग्रणीजन व कर्मयोगियों को जो
निष्क्रमण के प्रथम चरण में जीवन-संघर्ष
के दौरान अनंत में विलीन हुए तथा जिनके आदर्शों
व जीवन के स्वर्णिम सूत्रों ने सभी को आलोकित किया। इन
युगपुरुषों की प्रेरणा व प्रतिबद्धता 'बहुजन हिताय बहुजन सुखाय' की
रही। इनके संकल्प, साहस, ऊर्जा एवं गतिशीलता के कारण अनेकानेक
उद्योगपति भी अभिप्रेरित हुए। परमार्थप्रिय इन महामानवों ने स्वयं तो मशाल
बनकर जीवन जिया ही, साथ ही उन्होंने अन्यों का पथ भी आलोकित किया।
फलत: जीवन-ज्योति बुझने पर भी ये कर्मयोगी शाश्वत प्रेरणा-पुंज बन
गये। इनकी प्रेरक, पथ-प्रदर्शक व अमिट छवि आज समूचे समाज
के स्मृति-पटल पर अंकित हो गई है, जिसने ध्रुवतारे की भांति
देशभर में अन्य असंख्य उद्यमियों को इसी मार्ग पर चलने
के लिए प्रेरित कर उनका मार्गदर्शन किया। पुरखों की
उसी परंपरा, विरासत एवं धरोहर से प्रेरणा पाकर
मारवाड़ियों की नवीन पौध, आज भी भारतीय
समाज तथा संपूर्ण विश्व को सुख,
समृद्धि व मानवहितार्थ प्रकाश
प्रदान कर रही है।

विषय-सूची

प्राक्कथन

10

1. वैश्यों में अग्रणी मारवाड़ी

14

2. प्रवसन पश्चात् तीव्र प्रगति

52

3. स्वतंत्रता आंदोलन के अविस्मरणीय प्रणेता

78

4. स्वाधीन भारत में सफलता के नये सोपान

114

5. जनसेवा में सदैव सहभागी

134

6. जीवन के विविध क्षेत्रों में सिरमौर

156

7. आधुनिक परिदृश्य : दूरदृष्टा एवं पथ-प्रदर्शक

180

8. संस्कारों एवं संस्कृति का आत्मावलोकन

208

परिशिष्ट 1 - कुछ असाधारण मारवाड़ी

232

परिशिष्ट 2 - परोपकार जगत के शिरोमणि

236

परिशिष्ट 3 - सेठों व उनके सेवकों की मार्मिक कहानियां

238

परिशिष्ट 4 - प्रेरक मारवाड़ी कहावतें व स्वर्णिम कथन

246

परिशिष्ट 5 - विशिष्ट सम्मतियां

250

परिशिष्ट 6 - शब्दावली

252

परिशिष्ट 7 - शेखावाटी की ऐतिहासिक मारवाड़ी फर्में

255

परिशिष्ट 8 - शेखावाटी के निकटवर्ती क्षेत्रों की फर्में

261

चयनित ग्रन्थसूची

264

नामानुक्रमणिका

270

प्राक्कथन

भारत के सामाजिक-आर्थिक विकास में व्यापारिक समाजों की अत्यंत महत्त्वपूर्ण भूमिका रही है। प्रस्तुत विषय पर विभिन्न विख्यात विद्वानों द्वारा आंशिक रूप से प्रकाश डाला गया है, जिनमें इवट्सन, नेस्फील्ड, सेनार, रिसले, क्रुक, इलियट तथा एन्थोवन प्रमुख हैं। इतिहास किसी भी समाज व देश की नींव होता है, जिस पर भविष्य के भवन का निर्माण होता है। इस नींव के माध्यम से उस समाज की वर्तमान तक की यात्रा का मूल्यांकन होता है जो भावी पीढ़ी के लिए पथ-प्रदर्शक है। जिस समाज का इतिहास नहीं होता उसके पास गर्व करने का न तो कोई आधार होता है, न ही उस समाज की नवीन पीढ़ी को प्रेरणा मिल पाती है। विदेशी विद्वानों द्वारा भारतीय व्यापारिक समाजों के ऐतिहासिक योगदान को लगभग अनदेखा किया गया। तत्पश्चात् पश्चिमी देशों का अनुसरण करते हुए राष्ट्र के आर्थिक इतिहास को भी उचित महत्त्व दिया जाने लगा और कुछ टीकाकार भारतीय व्यापारिक समाजों की उपलब्धियों का वस्तुपरक मूल्यांकन भी करने लगे। पूर्व राजपूताना और इसके निकटवर्ती क्षेत्रों से देश के अन्य हिस्सों में फैले मारवाड़ियों का इतिहास भी इसी समीक्षा का अंग है। इस समाज की शताब्दियों पुरानी असाधारण विरासत रही है जिसमें असंख्य आदर्श पुरुष हो चुके हैं। इसलिए मारवाड़ी होना केवल विशेष पहचान ही नहीं है, बल्कि एक व्यापक संपूर्णता वाली विरासत का हिस्सा भी है, जो इनके पूर्वज अपनी भावी पीढ़ी के लिए छोड़ गये हैं। अधिकांश इतिहासकारों का मानना है कि समाज व सामाजिक संस्थाओं के द्वारा जब तक आवश्यक सूचना उपलब्ध नहीं करवाई जाती है, तब तक उस समाज का पूर्णत: सही चित्रण प्रस्तुत करना संभव नहीं हो पाता है।

पूर्व राजपूताना, मालवा रियासत एवं निकटवर्ती क्षेत्रों से देश के विभिन्न भागों में प्रवसित मारवाड़ी समाज मूलत: एक व्यापारी तथा व्यवसायी समाज है। 'मारवाड़ी' शब्द मात्र किसी जाति-विशेष का सम्बोधन न होकर देश का एक विशिष्ट सामाजिक-सांस्कृतिक समूह का सूचक है। संभवत: राजस्थान की शुष्क जलवायु, जल के अभाव एवं दिनोंदिन विषम होती आर्थिक परिस्थितियों ने ही मारवाड़ियों में जुझारूपन और जीवटता की उस अनूठी भावना का संचार किया जो धीरे-धीरे उनकी पहचान बनती चली गई। पुरानी पीढ़ी ने बहुत-सी बातें अपने पूर्वजों से सीखीं तथा समय के साथ-साथ अपने अनुभवों में वृद्धि की, जिसमें नवीन विचारधारा व भावनाएं जुड़ती चली गईं। इस प्रकार हमारी संस्कृति पीढ़ी-दर-पीढ़ी हस्तांतरित होती रही। यही जीवंत तथा अमूर्त सांस्कृतिक विरासत इस समाज के इतिहास का महत्त्वपूर्ण अध्याय है, जिसमें मारवाड़ियों के रीति-रिवाज, उत्सव, धर्म-संस्कार, वेशभूषा, खान-पान, लोकगीत, लोकनृत्य, जीवन-शैली व पर्व-त्योहार आदि शामिल हैं, जिन पर इस कॉफी टेबल बुक में प्रकाश डालने का प्रयास किया गया है। इन लागों ने सदैव स्वामी विवेकानंद के इस कथन को जीवन में उतारा, ''सहायता करो, संघर्ष नहीं; समावेशन करो, विध्वंस नहीं; मेल-मिलाप व शांति रखो, मतभेद नहीं।'' इनकी विरासत गतिहीन न होकर विकासोन्मुख एवं गत्यात्मक रही है जो महान भारतीय संस्कृति का परिचायक है।

दुर्लभ एवं नयनाभिराम चित्रों से सुसज्जित इस कॉफी टेबल बुक में मारवाड़ियों के देश के विभिन्न भागों में जाकर बसने और उनके इस संघर्ष को रोचक ढंग से प्रस्तुत करने का प्रयास किया गया है। अपनी ईमानदारी, दूरदृष्टि और कारोबारी कुशलता से ओत-प्रोत वे देशी रियासतों के राजा-महाराजाओं का विश्वास जीतने में सफल रहे। उन्होंने न केवल प्रशासन की बागडोर संभाली, अपितु अवसर पड़ने पर युद्ध के मैदान में भी अपना कौशल दिखाया और सैनिकों के रूप में अनेक युद्धों में विजयी होकर देशसेवा का सौभाग्य प्राप्त किया। अनेक शासकों ने उन्हें अपने मंत्रियों, सलाहकारों और दीवानों के रूप में भी नियुक्त किया और उत्कृष्ट सेवाओं के लिए मान-सम्मान दिया। स्वतंत्रतापूर्व और उसके पश्चात् भारत में मारवाड़ीजन अपनी बहुमुखी प्रतिभा के बल पर व्यवसाय, उद्योग तथा विभिन्न सामाजिक गतिविधियों के क्षेत्र में भी शीर्ष स्थान प्राप्त करते चले गये।

प्रतिकूल परिस्थितियों में संघर्ष करते हुए मारवाड़ियों ने छोटे-छोटे व्यापारियों के रूप में अपनी शुरुआत की और धीरे-धीरे प्रतिष्ठित व्यापारियों के बेनियनों की भूमिका निभाने लगे। कालांतर में यह समाज ब्रिटिश व्यापारियों के एकाधिकार को चुनौती देने लगा। भारत की पहली जूट मिल, पहले भारतीय बैंक, पहली भारतीय बीमा कंपनी, पहली धागा मिल और बिजली से चलने वाले पहले लौह कारखाने की स्थापना का श्रेय उन्हें ही जाता है। अपने कठोर श्रम से अर्जित आय का एक प्रमुख अंश वे जनकल्याण के कार्यों तथा देश के स्वतंत्रता आंदोलन को प्रोत्साहन देने के लिए व्यय करते रहे। यह एक आम धारणा है कि मारवाड़ी मात्र अपने व्यवसाय पर ध्यान देते हैं, किन्तु वास्तव में उन्होंने सन् 1857 की क्रांति के साथ-साथ भारत के स्वतंत्रता संग्राम में भी बढ़-चढ़कर भाग लिया, जिसमें अढ़ाई सौ से अधिक मारवाड़ियों को अंग्रेजों द्वारा फाँसी पर लटका दिया गया। यह अपने-आप में एक विडम्बना है कि इतिहासकारों की दृष्टि स्वतंत्रता संग्राम में मारवाड़ियों के अभूतपूर्व योगदान पर नहीं गई, जिसके कारण उन्हें इतिहास के पन्नों में उचित स्थान प्राप्त नहीं हो पाया।

भारत में स्वाधीनता के पश्चात् मारवाड़ी व्यापार में तीव्र प्रगति करते हुए निजी क्षेत्र के महारथी बनते चले गये। विभिन्न प्रमुख व्यापारिक व वाणिज्यिक संस्थानों के अध्यक्ष व अन्य महत्त्वपूर्ण पदों के लिए अधिकतम बार चुने जाने के साथ ही देश के औद्योगिक नेतृत्व की बागडोर संभालने के कारण उनकी साख में वृद्धि होती ही चली गई। 1990 के दशक में आर्थिक उदारीकरण का दौर आने के बाद देश के आर्थिक पुनर्निर्माण में उनकी विशिष्ट भूमिका रही। मारवाड़ियों की नस-नस में व्याप्त कारोबारी सूझबूझ समय के साथ एक किंवदंती बनती चली गई, जो अब अपूर्व सफलता की एक महागाथा का विशाल रूप धारण कर चुकी है। इतना ही नहीं, उद्योग व व्यवसाय के क्षेत्र में उनका अनूठा कौशल अब राष्ट्र की सीमाओं को लांघकर विश्वविख्यात हो चुका है। इसके बावजूद मार्क्स का यह विचार अनेक लोगों को आकर्षित करता रहा है कि पूंजीपतियों को समाप्त करके श्रमिकों को समान स्तर पर ले आया जाए जबकि महात्मा गांधी इसके सर्वथा विपरीत सोचते थे। उनका मानना था कि हमें ऐसा कभी नहीं करना चाहिए क्योंकि जब पूंजीपति नहीं रहेगा, तो मजदूर भी नहीं रहेगा। इसलिए हमारा प्रयास यह रहना चाहिए कि स्नेहपूर्वक उद्योगपतियों और व्यापारिक वर्गों का हृदय-परिवर्तन करें ताकि वे न केवल श्रमिकों के हितों का संरक्षण करें, अपितु संपूर्ण देश व समाज के विकास में भी अपना रचनात्मक सहयोग देते रहें।

राष्ट्रीय स्तर की शोध संस्था आईआईएमई, जयपुर जो कि भारत सरकार का एक वैज्ञानिक एवं औद्योगिक शोध संगठन है, ने राष्ट्रीय महत्त्व के व्यापक व गहन शोधात्मक अध्ययन किये हैं। प्रस्तुत कॉफी टेबल बुक में अब तक किये गये अध्ययनों में विद्यमान समस्त रिक्तताओं की पूर्ति तो है ही, साथ ही इस विषय पर लिखी कुछ चयनित पुस्तकों की विषयवस्तु से प्राप्त अतिरिक्त तथ्यों का भी समावेश किया गया है। इसके साथ ही यह कॉफी टेबल बुक समाज की बहुमुखी प्रतिभाओं एवं राष्ट्रीय व अंतरराष्ट्रीय स्तर पर अपनी अमिट छाप छोड़ने वाले समाज की महान विभूतियों के बारे में अनेक अंतरंग व व्यापक विवरण प्रस्तुत करती है। शिक्षा, संस्कृति एवं साहित्य के विकास में अपने योगदान के अतिरिक्त मारवाड़ी समाज ने वैज्ञानिक शोध, सकारात्मक राजनीति तथा अन्य रचनात्मक क्षेत्रों में भी बढ़-चढ़कर सक्रिय भूमिका निभाई है। सबसे बढ़कर,

जनकल्याण से जुड़ी समाज की विविध गतिविधियों ने इन्हें विशिष्ट पहचान दी है। विभिन्न प्रकार की जनसेवाओं पर मारवाड़ियों द्वारा किया गया योगदान अतुलनीय रहा। इसी विशिष्टता के कारण महात्मा गांधी एवं पं. जवाहरलाल नेहरू जैसी महान राष्ट्रीय विभूतियां भी मारवाड़ियों के इस गुण का बखान करते नहीं थकती थीं। प्रस्तुत कृति मूलत: विभिन्न स्रोतों पर आधारित है जिसकी प्राथमिक जानकारी, इस समाज के मुनीम-गुमाश्तों व उद्यमियों के साथ व्यक्तिगत भेंटवार्ताओं से प्राप्त की गई है।

इस उद्देश्य हेतु हमारी टीम ने तीन लाख पचास हजार किमी. से भी अधिक की यात्राएं पूर्ण कर दो हजार दिनों के शोध के दौरान समाज से प्रत्यक्ष या परोक्ष रूप से जुड़े लगभग आठ हजार लोगों के साथ बातचीत की। इनमें बड़ी-बड़ी कंपनियों के अध्यक्षों से लेकर नौकरीपेशा मारवाड़ी तक सम्मिलित हैं। पृथक्-पृथक् पृष्ठभूमि के इन लोगों ने समाज के बारे में अनोखे किस्से-कहानियां सुना हमें उनके बारे में कितनी ही अनजानी-अनकही व रोचक तथ्यों से अवगत करवाया तथा समाज के असाधारण उद्यम के विविध पहलुओं के बारे में एक नवीन अंतर्दृष्टि भी प्रदान की। शोधवेत्ताओं ने कठोर श्रम द्वारा लगभग दो लाख पृष्ठों की समस्त जानकारी को एकत्रित किया। इसके अतिरिक्त अनेक व्यक्तिगत आंकड़े, संस्मरण, डायरियां व बहीखाते, *ब्रिटिश गजेट*, जनगणना रिपोर्ट्स, आत्मकथाएं, दैनिक समाचार-पत्र व पत्रिकाओं के साथ समय-समय पर आयोजित होने वाले अधिवेशनों और सम्मेलनों के विवरण भी जुटाए गये। देश के विभिन्न भागों में बिखरे पड़े अल्पज्ञात सूत्रों के आधार पर यह कॉफी टेबल बुक तैयार की गई है। गंध व सीलन-भरे कमरों और विस्मृत पुरातात्विक स्थलों में अतीत को खंगालते हुए विषय से सम्बन्धित तथ्यात्मक जानकारी जुटाने के प्रयास आरंभ किये गये। इस शोध अध्ययन के दौरान जो सामग्री हमें प्राप्त हुई उसका उल्लेख इस कॉफी टेबल बुक में किया गया है, जिसे हमारी टीम ने अति रोचक एवं रचनात्मक शैली में प्रस्तुत किया है ताकि भावी अध्येताओं को एक ही स्थान पर ठोस व तथ्यात्मक जानकारी सुलभ हो सके।

सतत सहयोग व सहायता करने वाले उल्लेखनीय महानुभावों जिनमें जे.के. समूह के हर्षपति सिंहानियां, एन. के. साह, राजेश कपूर, बजाज समूह के नीरज बजाज, श्याम एस. मनियार, केजीके समूह के नवरतन कोठारी, वेलस्पन की दीपाली गोयनका, अमूल्य माईका के राकेश अग्रवाल, हल्दीराम के मनोहर लाल अग्रवाल, पायोनियर्स समूह के सुशील कुमार जैन, मनोज मुरारका, श्रीकुमार बांगड़, जे. पी. चौधरी, संजय झंवर, डॉ. जुगल किशोर सर्राफ, सीताराम शर्मा, शिव कुमार लोहिया, गोवर्धन प्रसाद गाड़ोदिया, प्रह्लादराय अगरवाला तथा समस्त मारवाड़ी समाज के विभिन्न संगठनों के पदाधिकारी शामिल हैं। कॉफी टेबल बुक के लेखन में योगदान हेतु उन सभी के प्रति आभार, जिन्होंने इस शोधकार्य में विनम्रता और सकारात्मक भाव के साथ सहायता प्रदान की। हम उन उद्यमियों के प्रति भी विशेष रूप से कृतज्ञ हैं जिन्होंने पूर्ण उत्साह के साथ अपने परिवारों एवं पूर्वजों के बारे में विस्तृत सूचना उपलब्ध करवाई, साथ ही शोधकार्य के दौरान निरंतर सहयोग एवं सुझाव देने हेतु हमारे साथ खुलकर विचार व जानकारियां साझा कीं। बहुत-से ऐसे महानुभाव भी हैं जिनका नाम यहां उल्लेखित नहीं है, परन्तु उनका प्रोत्साहन और शुभकामनाएं भी हिम्मत व हौंसला बढ़ाती रही हैं।

ज्ञान और साहित्य के विशाल भंडार 'बिजनेस हिस्ट्री म्यूजियम', आईआईएमई, जयपुर तथा शोध-सहयोगियों ने भी हमारी यथासंभव सहायता की। विविध विषयों पर संग्रहालय में विद्यमान पुरातन व अद्यतन पत्र-पत्रिकाओं के दुर्लभ कोष से भी यह शोध विशेष समृद्ध हुआ। हम भारत और विदेश में स्थित उन समस्त निजी व सार्वजनिक पुस्तकालयों, संग्रहालयों, कला-संग्राहकों और कला-दीर्घाओं के प्रति भी कृतज्ञता व्यक्त करते हैं। कॉफी टेबल बुक में प्रकाशित अधिकांश पेंटिंग्स, प्रिंट, नक्शे, चित्रांकन एवं प्राथमिक छायाचित्र उन्हीं के सौजन्य से प्राप्त हुए हैं। कई कलाकारों ने हमारे विचारों को आत्मसात कर विविध विषयों पर पेंटिंग्स भी तैयार कीं। मारवाड़ी समाज की सांस्कृतिक विरासत के बारे में ऐसी अंतर्दृष्टि प्राप्त करना वास्तव में एक सुखद तथा आह्लादपूर्ण अनुभव रहा है। कहने की आवश्यकता नहीं है कि समाज की इस प्रकार की भव्य ऐतिहासिक यात्रा को कॉफी टेबल बुक के सीमित पृष्ठों में समाहित करना अपने आप में एक अत्यंत ही चुनौतीपूर्ण कार्य था। शोध के दौरान हमारी टीम को भौगोलिक रूप से भी अनेक चुनौतियों का सामना करना पड़ा। एक विशाल क्षेत्र का अध्ययन करना एवं प्राथमिक व सहायक जानकारी के साथ-साथ चित्र एवं नक्शे इत्यादि जुटाने के लिए हमें प्रचुर संसाधनों और मानव-शक्ति की आवश्यकता रही, परन्तु सीमित संसाधन होने के कारण, अपनी टीम के असीम उत्साह, लगन व हिम्मत पर अधिक विश्वास करना पड़ा। आज हम संतुष्टि की एक गहन भावना से अभिभूत हैं; क्योंकि इसमें रंचमात्र भी संदेह नहीं है कि मारवाड़ी समाज के सर्वांगीण व अप्रतिम योगदान को जनमानस के बीच में लाने की महती आवश्यकता है ताकि भावी पीढ़ियों हेतु यह प्रेरक व पथ-प्रदर्शक के रूप में स्वीकार्य हो।

कॉफी टेबल बुक के उत्कृष्ट संपादन और रचनात्मक सुझावों के लिए रामानंद राठी, प्रो. सुरेन्द्र डी. सोनी, गोविन्द सिंह नेगी, अशोक भारतीय, किशन चंद एवं मंजू खन्ना का हार्दिक साधुवाद व्यक्त करते हुए उनके प्रति आभार। इसी तरह, शोधकार्य में कुशलतापूर्वक अथक सहयोग देने एवं पांडुलिपि पर समय-समय पर अपना अभिमत व्यक्त करने के लिए कई अन्य मारवाड़ी बंधुओं का भी आभार। इस कलात्मक कृति को समृद्ध बनाने वाले दुर्लभ व आकर्षक चित्रों की व्यवस्था के लिए सुजाता टकनेत, मिशेल बेंगुइन, ड्योडी वॉन शेवॉन, अनुराग शर्मा, योगेन्द्र गुप्ता, राज चौहान, त्रिलोकचंद महावर, गोपाल कुमावत और डिनोदिया फोटो लाइब्रेरी का भी धन्यवाद। साथ ही समदर सिंह खंगारोत, सुरेश चन्द्र शर्मा, दीपक शर्मा, धर्मपाल, त्रिभुवन सिंह, राजेन्द्र आर्य और विकास सोनी का भी आभार, जिन्होंने अथक परिश्रम एवं लगन से एक से बढ़कर एक आकर्षक पेंटिंग्स तैयार कर इस कॉफी टेबल बुक की शोभा में अभिवृद्धि की।

इसके अतिरिक्त इस कठिन तथा चुनौतीपूर्ण शोधकार्य में एस. एन. सिंह, चिराना, विनोद भारद्वाज, जयबोध व श्रद्धा पांडे, पी. पी. अशोक, रजत व आंचल अग्रवाल, नलिनी गुप्ता, शालिनी माथुर, नेहा साही, उम्मेद सिंह एवं सीता भाटी, राजेश कुदीवाल व आनंद सोनी के सहयोग तथा प्रोत्साहन को भी नहीं भुलाया जा सकता, एतद् इन सभी का धन्यवाद। छोटेलाल व मनोज पांचाल का भी हृदय से आभार जिन्होंने अपनी निष्काम सेवा-भावना का परिचय देते हुए कॉफी टेबल बुक के लेखन में अपार सहयोग प्रदान किया। इसी के साथ हमारे पारिवारिक सदस्यों का भी धन्यवाद जिन्होंने सदैव सुख-दु:ख में इस कॉफी टेबल बुक के लेखन हेतु प्रतिक्षण प्रोत्साहित कर निरंतर शक्ति प्रदान की। साथ ही उन्होंने इसके कला-पक्ष एवं चित्रों से जुड़े शोधकार्य को अपने हाथों में लेकर अथक प्रयासों से पांडुलिपि की सूक्ष्म समीक्षा करके अपने अमूल्य सुझावों के द्वारा इस कृति को समृद्ध बनाने में भी समुचित सहयोग प्रदान किया। इसी प्रकार देवाशीष व देवांग ने भी मौन प्रोत्साहन देते हुए समय-समय पर हमारी ऊर्जा में नये प्राण फूंककर अप्रत्यक्ष रूप से महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाई। सत्य तो यह है कि उनके स्नेह, लगन तथा उत्साह ने हमारे पंखों को एक ऊंची उड़ान दी जिसके बिना यह लेखन-यात्रा संभव ही न हो पाती।

सीआईआरएमसी, जयपुर की टीम का भी बहुत-बहुत धन्यवाद। इस कॉफी टेबल बुक का उत्कृष्ट एवं मर्यादापूर्ण डिजाइन इसे एक शाश्वत एवं आकर्षक रूप प्रदान करता है। थॉमसन प्रेस इंडिया लिमिटेड, नई दिल्ली के प्रबंधकों का विशेष रूप से आभार, जिन्होंने मुद्रण के उच्चतम मापदंड प्राप्त करने में कोई कसर नहीं छोड़ी। आशा है कि प्रस्तुत कॉफी टेबल बुक मारवाड़ी समाज के सम्बन्ध में नवीन विचारधारा, जागरूकता एवं ऊर्जा का संचार करेगी तथा देश के युवाओं को एक अक्षुण्ण प्रेरणा प्रदान करती रहेगी। भौतिक संपत्ति तो एक अस्थायी वस्तु है, किन्तु इतिहास युगों की बुद्धिमत्तापूर्ण अमूल्य धरोहर है, अत: मारवाड़ी समाज से विनम्र अनुरोध है कि वे अपने इस गौरवशाली इतिहास को अवश्य सहेजकर रखें।

जयपुर
25 जनवरी, 2025

डॉ. डी. के. टकनेत